P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-9*(Part-1) December 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 Remarking An Analisation

स्त्री विमर्श और हिन्दी साहित्य/ स्त्री जीवन दोहरा अभिशाप/खंड–खंड विभाजित स्त्री विमर्श

सुमेर सिंह स्वामी
सह–आचार्य,
हिन्दी विभाग,
राजकीय लोहिया महाविद्यालय,
चूरू, राजस्थान

सारांश

स्वतंत्र हुए आधी सदी से ज्यादा गुजर गई, लेकिन स्त्री दलन के प्रति हमारे उन्नतशील समाज का रवैया आदिकालीन ही है। विवश होकर नारी ने अपने अस्तित्व को मानवीय रूप में अनुभव करने और करवाने के लिए आंदोलन किया और कहा कि ''मैं भी मनुष्य हूं और अन्य मनुष्यों की भांति इस समाज में सम्मान पूर्वक रहने के अधिकारी हूं। आज की नारी सामाजिक, परिवारिक, राजनीतिक, धार्मिक, नैतिक, भौतिक, उपभोक्तावादी और बाजारवादी संस्कृति से बहुमुखी त्रास का ग्रास बनने को मजबूर है

अशिक्षा और आर्थिक अभाव ने उसे और कमजोर बना रखा है। प्राचीनता और नवीनता के बीच उसका स्त्री से भी उतना ही विरोध है जितना पुरुष से। शहरी और ग्रामीण स्त्रियां विविध प्रतिकूलताओं के बीच जीवन यापन कर रही हैं।स्त्री की स्थिति अधीनस्थता की है। यह तथ्यगत विश्लेषण है कि नारीत्व का मिथक आखिरी है क्या ? क्यों स्त्री को धर्म, समाज, रूढ़ियां और साहित्य शाश्वत नारीत्व के मिथक के मध्यम से प्रस्तुत करते हैं। विश्व की प्रत्येक संस्कृति में पाया जाता है कि या तो स्त्री को देवी के रूप में रखा गया या गुलाम की स्थिति में। अपनी इन स्थितियों को स्त्री ने सहर्ष स्वीकार किया, बल्कि बहुत सी जगहों पर वह सह–अपराधिनी रही। आत्महत्या का यह भाव स्त्री में न केवल अपने लिए रहा, बल्कि वह अपनी बेटी, बहू या अन्य स्त्रियों के प्रति भी आत्मपीड़ा जनित द्वेष रखती आई है। परिणाम स्वरूप स्त्री की अधीनस्थता और बढ़ती गई और वह विभिन्न भूमिकाओं में 'अन्या' बना दी गई।

सीमोन द बोउवार की रचना –'द सेकेंड सेक्स' (१९४९) नारी केंद्रित सभी महत्वपूर्ण प्रश्नों के सवालों का संतुलित जवाब देती है । सीमोन स्त्री पुरुष को वर्गीकृत करके पहले जैविक,मनोवैज्ञानिक, ऐतिहासिक, सामाजिक, पारिवारिक, राष्ट्रीय क्षेत्रों में दोनों के मध्य द्वंद्व और द्वन्द्व की परिणति को विभिन्न संदर्भों में विश्लेषण करती है। वे लिखती हैं –''स्त्री अपनी स्थिति के लिए स्वयं जिम्मेदार है। वह पुरुष के साथ सह अपराधिनी है। अतः समाजवाद की स्थापना मात्र से स्त्री मुक्त नहीं हो जाएगी। समाजवाद भी पुरुष की सर्वोपरिता की ही विजय बन जाएगा।''

मुख्य शब्द : स्त्री विमर्श, स्त्री सृजनात्मकता

प्रस्तावना

आधुनिक साहित्य में स्त्री सृजनात्मकता ने पुरुष सत्तात्मक क्षेत्र में अपनी रचना धर्मिता से आंशिक जगह बनाई है। कुछेक अपवादों को छोड़कर सामंती मानसिकता से ग्रस्त हिंदी साहित्यकार, मूर्धन्य आलोचक, समकालीन सर्जन परिदृश्य में स्त्री रचनाकारों की चुनौतीपूर्ण सहभागिता को 'जनाना लेखन' के खिताब से विभूषित कर उसे अपने से कमतर साबित करने में जुटे हैं। भारतीय संदर्भ में यदि हम स्त्री लेखन के इतिहास का अवलोकन करें तो इतिहास के पन्नों पर पहली पुस्तक के रूप में 'थेरी गाथा' आती है जिसमें गौतम बुद्ध के समकालीन भिक्षुणियों ने अपने जीवन अनुभव अंकित किए हैं। दूसरी पुस्तक के रूप में पाते हैं–'सीमन्तनी उपदेश', जिस की लेखिका का नाम अज्ञात है। तीसरी पुस्तक के रूप में उल्लेखनीय है' स्त्री–पुरुष तुलना'जिसे ताराबाई शिंदे ने लिखा है। इसमें उन्होंने लिखा है''शास्त्रों का उदाहरण तो सभी देते हैं। प्राचीन काल की जिन स्त्रियों को पतिव्रता कहा है,उनमें से 2–4 तो दोष पात्र रही है, फिर भी उन्हें पतिव्रता का गौरव प्राप्त हुआ। द्रोपदी पांच पांडव की पत्नी होते हुए भी अंतर्मन में कर्ण का चिंतन करती थी, क्या यह तथ्य सही नहीं है? अहिल्या इंद्र के साथ रत होकर पत्थर बन गई। सत्यवती तथा कुंती नें कौमार्य– अवस्था में ही क्रमशः वेदव्यास तथा कर्ण को जन्म दिया। फिर भी वे सब श्रेष्ठ है। एक ने शरीर से दुर्गंधी नष्ट करने के लिए ऋषि वचन मान लिया

और दूसरी ने मंत्र का प्रभाव भी देख लिया। वाह रे ऋषि! सब एक से बढ़कर एक।''

अध्ययन का उद्देश्य

इस आलेख का उद्देश्य नारी चेतना की मुहिम साहित्य के जरिए कहां सें आरंभ होकर कहां तक आ गई है, यह बताना है। नर–नारी की समता का मुद्दा सामान्य न्याय का अहम प्रश्न है । इस समस्या का निवारण करना आवश्यक है। सुंदर, स्वस्थ समाज के लिए स्त्री और पुरुष अपने प्राकृतिक विभाजन को बनाए रखते हुए भी आपसी सौहार्द बनाए रखें यही महत्वपूर्ण है ।आज समय आ गया है कि भारतीय स्त्री की प्रगतिशील छवि का आदर करते हुए उसे समाज का महत्वपूर्ण घटक माना जाए।

हेमलता महेश्वर ने अपने शोध पत्र में लिखा है कि– ''स्त्री दास्तां या उसकी अधिकार चेतना को लेकर पहली पुस्तक संस्कृत में नहीं,बल्कि उर्दू में आई तथा दूसरी पुस्तक मराठी में। जर्मन ग्रियर ने अपनी पुस्तक– 'विद्रोही स्त्री' में लिखा है कि ''विशेष तौर पर लड़कियां अपनी समस्याओं को लिखकर व्यक्त करने में विशेष पारंगत होती है।'' कुछ पुरुषों ने भी अपने संवेदनशील लेखन द्वारा नारी को केंद्र बिंदु मानकर गद्य और पद्य में नारी को गौरव प्रदान किया है, लेकिन जिस प्रकार दलित विमर्श में सहानुभूति बनाम स्वानुभूति का द्वंद्व है,उसी प्रकार स्त्री लेखन में भी पुरुषों के लेखन पर आरोप लगाए जाते हैं, कि उसने स्त्री को देवी के रूप में प्रतिष्ठित करने का प्रयास करके अपने ही स्वार्थ को सिद्ध किया है। सिमोन का मत है कि–ष ''बचपन से लेकर जीवन पर्यंत पुरुष उसके इस समर्पण भाव की प्रशंसा करते रहते हैं ।स्वतंत्रता सब को डराती है,स्त्री भी इसका अपवाद नहीं और यदि गुलामी की प्रशंसा हो तो क्या कहना ? समर्पण के नाम पर मिलने वाली सुविधा का प्रलोभन किसी को भी हो जाएगा ।'' पुरुष के प्रति समर्पण से ही वह उसे देवी की उपाधि का प्रलोभन देकर स्वयं मुक्त रहता है। आधुनिक युग में नारी चेतना की अलख जगाने का कार्य बहुतत सी महिला साहित्यकार कर रही हैं,जिनमें चित्रा मुद्गल, कृष्णा सोबती, मनु भंडारी, मृदुला गर्ग,नासिरा शर्मा, मंजुल भगत, उषा प्रियंवदा, मैत्री पुष्पा,राजी सेठ, प्रभा दीक्षित, प्रभा सक्सेना, प्रभा खेतान, ममता कालिया, नमिता सिंह, शिवानी, पद्मा सचदेव आदि के नाम महत्वपूर्ण है। भारतीय नारी के शोषण एवं अत्याचार के विभिन्न पहलुओं को इन्होंने बारीकी से उकेरा है । 21वीं सदी की लेखिकाओं ने स्त्री जीवन की नाना समस्याओं, रूढ़ियों, परंपराओं की जकड़न को अधिक संजीदगी के साथ बयान किया है। वर्तमान में सामान्य अनपढ़ महिलाओं के साथ शिक्षित, कामकाजी और सभ्रांत महिलाओं का भी नाना स्तर पर शोषण जारी है। उन्हें सेकेंड सेक्स यानी, उपेक्षिता,अन्या,दोयम दर्जे का माना जाता है। सिमोन व बोउवार ने अपनी पुस्तक सेकंड सेक्स में विश्व की महिलाओं का सर्वेक्षण करके यह निष्कर्ष निकाला है,कि महिलाएं सर्वत्र उपभोग की वस्तु है और उनका नाना प्रकार से उपभोग होता है। शारीरिक, मानसिक और आर्थिक स्तर पर।

महिला जीवन की समकालीन समस्याएं हैं– दांपत्य जीवन में दरार और विघटन उनका आर्थिक, शारीरिक और मानसिक शोषण, उनको समानता का अधिकार नहीं मिलना, उनको दोयम दर्जे का मानना, उन्हें विकास के पर्याप्त अवसर न देना, उनकी अस्मिता पर उठते प्रश्नचिन्ह, कामकाजी महिलाओं का आत्म संघर्ष, नैतिकता एवं आधुनिकता का द्वंद्व। उषा देवी मित्रा कृत 'नष्ट–नीड़' की सुनंदा की समस्या परित्यक्ता की समस्या है।'पिया' उपन्यास में विधवाओं के दुख का सबसे बड़े कारण हैं–उनकी आर्थिक परतंत्रता एवं बहुत प्रकार के बंधन। 'वचन का मोल' की कजरी प्रेम के लिए सर्वस्व त्याग कर आजन्म सेवावृति है। कृष्णा सोबती कृत 'मित्रो मरजानी; की दबंग नायिका मित्रों पहली बार पुरुष सत्तात्मक समाज में पुरुषों द्वारा दी गई अपनी सामाजिक छवि को उतार फेंकते हुए मूल्य, मर्यादाओं की पुरानी नींवों,शहतीरों को हिलाती हुई ,पति से अतृप्त,आंचल में मुंह दबाकर पारंपरिक स्त्री की भांति उसे अपनी नियति का खेल स्वीकार न कर, अचानक विद्रोह का स्वर बुलंद करती है। सोबती की'डार से बिछुड़ी' की पाशो अल्हड़ किशोरी जिंदगी भर भटकती रही थी। कृष्णा सोबती की यह चर्चित कृति वस्तुतः परंपरागत और रूढ़िग्रस्त समाज में नारी के जकड़न की कहानी है। ऐसे समाज में नारी स्वभाव की तमाम कोमलताओं का शोषण होता है उसकी स्वतंत्रता भी कैसी दारूण है।

जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में उससे भिन्न भिन्न ने व्यक्तित्व की मांग के कारण आधुनिक नारी का व्यक्तित्व खंडित होने लगा है । दोहरे स्तर पर जीवन जीने के लिए विवश नारी की नैसर्गिक सरलता और सहजता लुप्त होने लगी है। एक मानसिक तनाव के मकड़जाल से अपने को मुक्त नहीं कर पा रही है। आधुनिक कामकाजी नारी जीवन भर जिन व्यथाओं को झेलती रहती है, उसका वर्णन नासिरा शर्मा ने अपने उपन्यास'शाल्मली' की नायिका के द्वारा किया है।ममता कालिया ने'बेघर' उपन्यास में सेक्स के स्वरूप को नए कौण से आंका है और इसे नया आयाम दिया है –खून नहीं आया, चिल्लाई नहीं। पति के पत्नी के प्रति सेक्स संबंधित पुरानी अवधारणा पर लेखिका ने चोट करनी चाहिए। मृदुला गर्ग ने अपने उपन्यास 'चितकोबरा' में कुंठा के परिहार पर बल दिया है। मंजुल भगत के उपन्यास 'अनारो' की नायिका अनारो निम्न वर्गीय नारी है, जो महत्वाकांक्षिणी है। समय और परिस्थितियों के अनुसार वह अपने को झट बदल लेती है। उषा प्रियंवदा के उपन्यास 'रुकोगी नहीं राधिका' की नायिका राधिका है, जो अपने अस्तित्व और स्वतंत्रता की खोज में न जाने कहां–कहां भटकती है । चित्रा मुद्गल का 'एक जमीन अपनी' में पहली बार विज्ञापन जगत में व्याप्त उस दलदल को रेखांकित किया है,जो समाज को खोखला कर रहा है, साथ ही स्त्री की समस्या से जुड़े उन तमाम प्रश्नों को भी पाठकों के सामने उघाड़कर रखा है,जो आधुनिकता, स्वतंत्रता, समता के नाम पर संचार माध्यमों के जरिए नारी को सौंपा जा रहा है। 'आवां' चित्रा मुद्गल का स्त्री विमर्श का पहला महा आख्यान है। 60 के बाद का मुंबई शहर के अंदर का आखयान है,बल्कि यह स्वतंत्र स्वतंत्र भारत की स्त्री चेतना में निरंतर आ रहे बदलावों का वृत्तांत है, जिसका वृत्त इतना बड़ा है, कि उसमें समकालीन महानगरीय स्त्री के

लगभग सभी रूप समा ही गए हैं। दलित जीवन और दलित विमर्श के कथानक भी आ गए हैं। इस रूप में इसे आज की स्त्री विमर्श के साथ दलित विमर्श को भी अपनी जद में लेने वाली महागाथा कह सकते हैं।

स्वाधीनता के बाद आई महिला कथाकारों ने स्त्री विमर्श को नया रूप दिया है। यह नया रूप अनदेखे समाज को अपनी तरह से देखने और अपनी स्वतंत्र पहचान बनाने के लिए था। यह दौर स्त्री–पुरुष के संबंधों के अंतर्द्वंदों को नए सिरे से पड़ताल करता हुआ रोमानीयत से स्पर्श व्यसन की भांति सिर पर चढ़कर बोलने वाला कथा दौर रहा है। इस दौर में महिला कथाकारों ने अहम के टकराव, पराश्रयता से मुक्ति, स्वावलंबन, प्रेम, विवाहेतर प्रेम, आदर्श प्रेम, तलाक, समानता एवं सुरक्षा विवादित मध्यमवर्गीय शील, अंतर्विरोध, उपभोक्तावादी प्रवृत्तियों का रेखांकन अपने कथा संसार में किया है। आर्थिक रूप से स्वावलंबी विवाहित महिलाओं के लिए मुक्ति की नई राह दिखाई है। आधुनिक कहानियों में नारी के प्रतिवाद का स्वर सुनाई पड़ता है। महिला कहानीकारों की कहानी के बारे में अनेक सवाल उठ सकते हैं । क्या इनकी कहानी पति–पत्नी के संबंधों तक ही सीमित है ? क्या इनकी कहानी लकीरी की फकीरी होने की गवाही नहीं देती ? क्या समकालीन संदर्भ इन की पकड़ से बाहर है ? जो इन्होंने लिखा क्या वह पुरुष कहानीकारों की कहानी में नहीं है ? यह महिला लेखन के विमर्श के पहलू है, लेकिन महिला कथाकारों ने नारी उत्पीड़न के हर बिंदु पर अपने तीखे तेवर दर्ज करवाए हैं। विवाह,जन्म ,बलात्कार,अशिक्षा, धर्म, नैतिकता, श्रम, देह ,उपभोक्तावादी दृष्टि तथा आरक्षण जैसे मुद्दे पर बेबाकी से अपनी बात को कह कर जन सामान्य को आंदोलित करने में अहम भूमिका का निर्वाह किया है ।

मध्य युग में मीरां ने समाज की झूठी मर्यादा को ही नहीं तोड़ा बल्कि राज्य सत्ता के अहंकार को भी ललकारा तथा धर्म की सत्ता में पुरुष की प्रधानता पर भी प्रश्नचिन्ह लगाए।

आधुनिक युग में.महादेवी वर्मा और सुभद्रा कुमारी चौहान ने नारी की करुणा, वात्सल्य और वीरता पूर्ण भावों को अपने औजार बनाकर संघर्ष का बिगुल बजाया। दरअसल नारी चेतना की मुहिम स्वयं के लिए अपने अस्तित्व को मानवीय रूप में अनुभव करने की है। स्त्री का संघर्ष आज तक जारी है। डॉक्टर लोहिया ने राजनीतिक पटल पर बहुत पहले ही स्पष्ट किया था कि –'नर नारी की क्षमता का मुद्दा सामाजिक न्याय का प्रश्न है। इस समस्या के निराकरण के बिना स्वस्थ, सभ्य समाज के सर्वांगीण विकास की परिकल्पना अधूरी है।'' सीमोन लिखती है कि ''स्त्री पैदा नहीं होती बल्कि उसे बना दिया जाता है क्योंकि पुरुष अधीनस्थता के कारण उसकी मनोवृत्ति पिंजरबद्ध तोते की भांति मुक्त गगन में उड़ने की स्मृति और उदासीनता से ग्रस्त हो गई है।'' जयंती रथ के उद्गार –

मेरी बेटी
अपनी गुड़िया से कहती है
मर जाती तो अच्छा था,
मुझे कितना परेशान करती है ।''
ठीक यही बात मेरी नानी ने
मेरी मां से कही थी और
मां ने मुझसे कही थी।''

नारी की चिर –पराधीनता के पीछे शोधपरक तथ्य यह है, कि पौरुषीय चेतना की तानाशाही ने हमेशा वस्तुपरक ढंग से अपनी प्रभुता स्थापित की है। मनुष्य की मौलिक इच्छा दूसरों पर शासन करने की रहती है। दासत्व की इस पीड़ा को उभारते हुए शीला सुभद्रा देवी ने लिखा है–

पैदा होते ही
मेधा को सरौते से काटकर
सपाट बना दिया गया
विचारों की कोंपलों को
सिर उठाने ही नहीं दिया
बंधनों के धागों से होठों को सी दिया
जो कुछ कहना चाहा कहने ने दिया , बस !

आज नारी के सामने कठिन चुनौती है, जिसका सामना वह कर रही है। नारी के संबंध में पुरुषों ने भी लिखा है लेकिन वह वैसा ही जैसा सीमोन लिखती हैं –''अब तक औरतों के बारे में पुरुष ने जो कुछ भी लिखा है, उस पूरे पर शक किया जाना चाहिए ,क्योंकि लिखने वाला न्यायाधीश और अपराधी दोनों ही है।''

आधुनिक युग में नारी विमर्श के पुरोधा महादेवी वर्मा का निबंध संग्रह 'श्रंखला की कड़ियां' स्वतंत्रता से पूर्व लिखे जाने पर भी स्त्री विमर्श का सुंदरतम दस्तावेज है। उन्होंने स्पष्ट किया है कि–''नारी में परिस्थिति के अनुसार अपने बाह्य जीवन को ढाल लेने की जितनी सहज प्रवृत्ति है, अपने स्वभाव गत गुण न छोड़ने की आंतरिक प्रेरणा उसे कम नहीं। इसीलिए भारतीय नारी भारतीय पुरुष से अधिक सतर्कता के साथ अपनी विशेषताओं की रक्षा कर सकी है। पुरुष के समान अपनी व्यथा भूलने के लिए वह कादंबिनी नहीं मांगती, उल्लास के स्पंदन के लिए लालसा का तांडव नहीं चाहती, क्योंकि दुख को वह जीवन शक्ति परीक्षा के रूप में ग्रहण करती है और सुख को कर्तव्य में प्राप्त कर लेने की क्षमता रखती है।''

आज जिस तरह सौंदर्य की होड़ को स्त्री के प्रगतिशील होने के रूप में आंका जा रहा है ,महादेवी वर्मा ने वहां वर्जनाएं लगाई है। इस समस्या को गहरे ढंग से रखती हुई वह कहती हैं –''स्त्री पत्नी बनकर पुरुष को वह नहीं दे सकती, जो उसकी पशुता का भोजन है। इसी से पुरुष ने कुछ सौंदर्य की प्रतिमाओं को पत्नीत्व तथा मातृत्व से निर्वासित कर दिया। वह स्वर्ग में अप्सरा बनी और पृथ्वी पर वीरांगना।''देह का प्रदर्शन उसकी उच्छृंखलता ही तो है। आज विज्ञापनों में अपने शरीर का प्रदर्शन करने वाली नारी के भविष्य को उन्होंने दूर से ही भांप लिया था और चिंता जताई थी कि ''आज तो नारी के बिना कोई भी वस्तु नहीं बिकती। नारी सौंदर्य प्रसाधन की तो आप बात छोड़िए, दुख तो तब होता है जब नारी के बिना सिगरेट नहीं बिकती और तो और ब्लेड नहीं बिकती।''

स्त्री स्वाधीनता का अर्थ हुआ कि स्त्री पुरुष के जिस पारस्परिक संबंध को निभा रही है, उससे मुक्त हो।

स्त्री पुरुष के बीच घटने वाले संबंध को नहीं नकारा जा सकता। उसका अपना स्वतंत्र अस्तित्व होगा और वह पुरुष की होकर भी जीएगी। दोनों अपनी अपनी स्वायत्तता में दूसरे का अन्य रूप भी देखेंगे। संबंधों की पारस्परिकता और अन्योन्याश्रितता से चाह, अधिकार, प्रेम और आमोद प्रमोद के अर्थ समाप्त नहीं हो जाएंगे और न ही समाप्त होंगे दो संवर्गों के बीच के शब्द। स्त्री पुरुष के बीच का विभेद वास्तव में एक महत्वपूर्ण नई सार्थकता को व्यक्त करेगा। मार्क्स कहते हैं –''स्त्री और पुरुष का आपसी संबंध सबसे अधिक प्राकृतिक है। विकास के दौरान हमें यह देखना है कि किस हद तक मानव सही मामले में मानव बना, यानि प्राकृतिक अवस्था में बढ़ते हुए मानवीय स्वभाव को उसने पाया ?''

निष्कर्ष

यह तो पुरुष को स्थापित करना है की दी हुई दुनिया में स्वाधीनता का आधिपत्य रहे । सर्वोच्च विजय के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि स्त्री और पुरुष अपने प्राकृतिक विभाजन को बनाए रखते हुए भी आपसी सौहार्द स्थापित कर सकें। वर्तमान भारतीय समाज धर्म प्रदान नहीं है। आज का युग वैज्ञानिकता और वैचारिकता की कसौटी पर टिका हुआ है। ऐसे में स्त्री मुक्ति आंदोलन का अर्थ संपूर्ण समाज की मुक्ति है । संपूर्ण समाज का उत्थान है । स्त्री–पुरुष पूरक हैं और पूरकता ही उन्हें पूर्णता प्रदान करेगी। खंड–खंड में विभाजित स्त्री और पुरुष से जो त्रासद स्थितियां वर्तमान में महसूस की जा रही है, वह धीरे–धीरे और भयावह रूप में हमारे सामने आएंगी और इससे सभी जीव मात्र प्रभावित होंगे।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *साहित्यिक निबंध– डॉ. रेणु वर्मा, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी जयपुर*
2. *नारी उपेक्षिता– सीमोन द सोमवार, अनुवादक– प्रभा खेतान*
3. *कृष्णा सोबती– मित्रो मरजानी*
4. *उषा प्रियंवदा –रुकोगी नहीं राधिका*
5. *महादेवी वर्मा –श्रृंखला की कड़ियां भूमिका भाग*
6. *समकालीन भारतीय साहित्य मार्च ,99*
7. *राजकिशोर संपादक– स्त्री परंपरा और आधुनिकता*
8. *ताराबाई शिंदे– स्त्री पुरुष तुलना, पृष्ठ 19–20*
9. *चित्रा मुद्गल –आंवा*
10. *मृदुला गर्ग –अनित्य*